गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत...

16 दिसम्बर से 22 दिसम्बर 2018

गुरुत्व ज्योतिष

साप्ताहिक ई-पत्रिका



Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
साप्ताहिक ई-पत्रिका
16 दिसम्बर से
22 दिसम्बर 2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

संपादकीय

भारतीय पंचांग में खरमास हर वर्ष सौर पौष मास को कहते हैं। भारत के कई हिस्सों में इसे मलमास एवं कई हिस्सों में काला महीना कहा जाता है। इस खर मास में हिन्दू धर्म में सभी प्रकार के धार्मिक और शुभ मांगलिक कार्य वर्जित माने जाते हैं। खर मास में यज्ञोपवीत, विवाह, गृह प्रवेश, भूमि पूजन, बेटी की विदाई, कई प्रकार के धार्मिक कर्मकांड आदि का निषेध माता जाता है।

पुराणों के अनुसार खर मास में मृत्यु का फल अशुभ होता है। महाभारत के अनुसार खर मास के दौरान जब अर्जुन ने भीष्म पितामह को सैकड़ों बाणों से बिन्ध दिया था। लेकिन बाणों की शैया पर लेटे होने बावजूद भी भीष्म पितामह ने अपने प्राण नहीं त्यागे। इसका मूल कारण खर मास की अशुभता है, क्योकि खर मास में यदि भीष्म पितामह ने प्राण त्यागे तो उनका अगला जन्म नर्क की ओर जाएगा। इसी लिए भीष्म पितामह ने अर्जुन से निवेदन किया की एक तीर चलाए जो उनके सिर पर एसे लगे ली वह तकिए के समान काम करे। खर मास की अशुभता से बचने के लिए भीष्म पितामह पूरे खर मास में अधमरी अवस्था में बाणों की शैया पर ही लेटे रहे और खर मास की समाप्ति के बाद माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को उन्हों ने अपने प्राणों का त्याग किया। क्योकि की एसी मान्यता हैं की माघ मास में देह त्याग से व्यक्ति सीधा स्वर्ग का भागी होता है। माघ शुक्ल एकादशी को देह त्यागने वाले को वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

सामान्य भाषा में खर गधे को कहते हैं। मार्कण्डेय पुराण में वर्णित हैं की भगवान सूर्यदेव अपने सतों घोड़ों के रथ पर सवार हो कर संपूर्ण ब्रह्मांड की परिक्रमा करते है। जिसमें भगवान सूर्यदेव को बिना रुके-थके निरंतर गतिमान रहना पड़ता है, लेकिन एक बार साल भर इसी प्रकार ब्रह्मांड की निरंतर परिक्रमा करते हुए भगवान सूर्यदेव के घोड़े अत्याधिक प्यासे हो जाते है। भगवान सूर्यदेव घोडों की स्थिति को देख उनकी प्यास बुझाने के उपाय सोचने लगते है। लेकिन दूसरी ही क्षण भगवान सूर्यदेव को निरंतर गतिमान रहेन का अपना कर्तव्य ज्ञात हो जाता है, कुछ दूर चलने के बाद उनकी नज़र तालाब के किनारे खड़े दो गधों पर पड़ती है। भगवान सूर्यदेव ने तालाब के निकट अपना रथ रोक दिया और अपने घोडों को रथ से छोड गधों को रथ से जोड़ अपनी यात्रा पर निकल पडते है। जैसा की गधे की गति घोडों से धीमी होती है। उसी प्रकार भगवान सूर्यदेव का रथ भी इस दौरान धीमी गति से भमण करता है। इस धीमी गति के कारण भगवान सूर्यदेव का तेज भी कम हो जाता है।

ज्योतिषीय के अनुसार सूर्य के धनु राशिमें प्रवेश से अर्थात धनु संक्रांति से खर या मलमास होता है। सूर्य जब बृहस्पति की धनु राशि अथवा मीन राशि में होता है, तो यह दोनों राशियां सूर्य की शुभता के लिए अशुभ राशि मानी जाती है। सूर्य का बृहस्पति की राशि में परिभ्रमण अच्छा नहीं माना जाता है, क्योंकि बृहस्पति की राशि में सूर्य कमज़ोर स्थिति में रहता हैं। सूर्य वर्ष में दो बार बृहस्पति की राशि धनु एवं मीन में परिभ्रमण करते है। सौर मास की गणना से प्रायः इन दोनों माह को धनुर्मास एवं मीनमास कहा जाता है। इन दोनों महीनों में सभी प्रकार के मांगलिक कार्य अशुभ माना जाता है। खास मास के दौरा अन्न-वस्त्र तथा औषधि का दान करना श्रेष्ठ कर माना है।

इस साप्ताहिक ई-पत्रिका में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों या अन्य जानकारी के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो परमात्मा की कृपा
आपके परिवार पर बनी रहे। परमात्मा से यही प्राथना हैं ...

चिंतन जोशी

***** साप्ताहिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका के लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

धनु संक्रांति 16 दिसंबर 2018 से शुभ कार्य वर्जित !

संकलन गुरुत्व कार्यालय

दिसंबर 2018 को सूर्य के धनु राशि में प्रवेश के साथ खरमास लगने से शुभ कार्य वर्जित माने जाते है, और यह खरमास अगले महीने सूर्य के मकर राशि में प्रवेश के साथ समाप्त हो जायेंगे। सूर्य के मकर राशि में प्रवेश से शुभ कार्य पुनः शुरू हो जाते है।
इस दौरान सभी प्रकार के मांगलिक कार्य निषेध माने जाते है।

सूर्य का मकर राशि में प्रवेश के साथ अर्थात मकर संक्रांति पर यह खरमास समाप्त होता है। साधारणतः संक्रांति सूर्य के किसी एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश को कहा जाता है। इसी क्रम में जब सूर्य का धनु राशी में प्रवेश होता हैं, तो उसे धनु संक्रांति कहा जाता है।

ज्योतिष के अनुसार धनु राशि के स्वामी देव गुरु बृहस्पति हैं। एसी धार्मिक मान्यता हैं धनु संक्रांति से अर्थात खरमास के दौरान सूर्य के राशि परिवर्तन से उसका प्रभाव क्षीण हो जाता है। किसी भी शुभ कार्य में सूर्य के बल की आवश्यक्ता होती है, जो इस दौरान क्षीण होने के कारण समस्त प्रकार के शुभ कार्य वर्जित माने जाते हैं।

सूर्य का प्रभाव गुरु की राशि में प्रवेश से कम हो जाता है, एसी मान्यता हैं ग्रहों के राजा सूर्य जब देवों के गुरु को मिलने जाते है, तो अपना तेक कम कर लेते है। इस विशेष संयोग से विभिन्न रोग बढ़ने का विशेष खतरा होता है। इस दौरान मानसिक चंचलता में भी वृद्धि होती हैं।

ज्योतिष में धनु राशी को सुख-समृद्दि-भाग्य की राशि माना जाता है। लेकिन सूर्य का धनु राशी में प्रवेश सुख-समृद्धि के लिए अशुभ होता। इस दौरान किये जाने वाले शुभ कार्य से भाग्य कमजोर होने की संभावनाएं अधिक होती है। इस दौरान किसी भी प्रकार के नये कारोबार इत्यादि की शुरुआत से उसमें अनाचश्यक रुकावट एवं आर्थिक स्थिती कमजोर होने की स्थिती प्रबल रहती हैं। नये व्यवसाय में अनावश्यक खर्च और कर्ज में वृद्धि के संभावनाएं भी प्रबल होती है। नई भूमि-भवन संबंधित कार्य भी इस दौरान अशुभ माने जाते है।

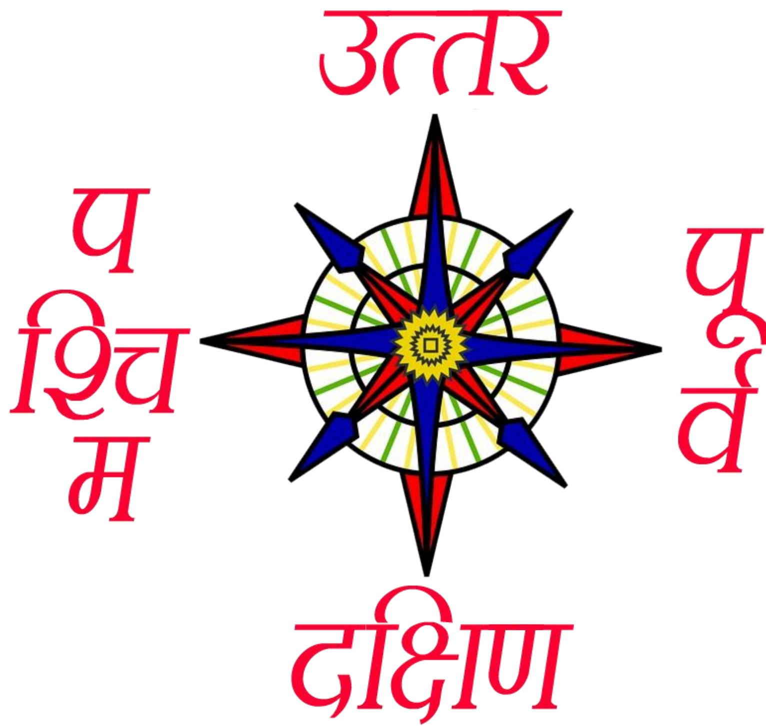
जो कार्य नियमित रूप से चल रहे हों खरमास का अशुभ प्रभाव उसमें विशेष प्रभावी नहीं माना इस लिए उसको जारी रखा जा सकता है।

खरमास नाम के पीछे की मन्यता हैं, की एक बार भगवान सूर्यदेव अपने सातो घोड़ों वाले रथ पर सवार होकर भ्रमण कर रहे थे। अधिक समय घूमते-घूमते घोड़े अपनी प्यास बुझाने के लिए एक तालाब के किनारे पानी पीने के लिए रुके। पानी पीने के बाद घोड़ों में आलस्य आ गया और वह तालाब के किनारे ही आराम करने के लिए रुक गए। सूर्यदेव को सृष्टि को जीवन उर्जा प्रदान करने का अपना कर्तव्य स्मरण हो गया। इस बीच सूर्यदेव को तालाब के किनारे दो गधे नज़र आए। सूर्यदेव नें अपने थके घोड़ों को किनारे पर ही छोड उने दों गधों को अपने रथ में जोड कर अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए निकल पड़े। गधों से जुडे रथ पर सवार भगवान सूर्यदेव एक माह तक इसी प्रकार धीमी गति से चलते रहे। जिस कारण उनके तेज का प्रभाव कम हो गया। फिर एक माह पश्चयात सूर्य के मकर राशि में प्रवेश अर्थात मकर संक्रांति पर अपने सातों घोड़ों पर सवार हो कर पुनः अपनी गति से चलने लगे।

पंच महाभूत तत्व एवं वास्तु

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

जिस भूमि पर भवन बनकर तैयार हो जाता है वहा पंचभूत का समनवय होता हैं। जिस प्रकार मानव शरीर में जो पंच माहाभूत (आकश, पृथवी, जल, वायु, अग्नि) तत्व समाहित होते हैं , यह पंच माहाभूत तत्व व्यक्ति द्वारा किये गये कर्म के अनुरुप उसका प्रभाव शुभ-अशुभ व्यक्ति के निवास स्थान पर पड़ता हैं। क्योकि मनुष्य एवं बह्याण्ड की संरचना पंच महाभूतों के आधार पर हुई हैं।



यदि प्रकृति के विरूद्ध इन पच महाभूत तत्व का संतुलन बिगड़ जाये तो व्यक्ति द्वारा किये जारहे कर्म गलत दिशामें होते हैं, जिस्से हमारी उर्जा यातो अधिक खर्च होती हैं या उर्जा गलत दिशा में व्यय होकर शरीर में अस्वस्थता पैदा होकर शारीरिक संतुलन को बिगाड़ देती है, जिस्से पारिवारिक कलह, आर्थिक तंगी, मानसिक तनाव, अशांति, रोग इत्यादि अनेक प्रकार कि व्याधि उतपन्न होती है।

इस लिए यह जरूरी है कि हम पंच महाभूत तत्वों का सन्तुलन रखे तो हमे जीवन में सभी प्रकार से सुख शांति एवं समृद्धि सरलता से प्राप्त होती हैं।

भवन निर्माण के बाद पंच तत्वों का गृह में अस्तित्व होता हैं इस लिये यह जरूरी हो जाता हैं कि इन पंच महाभूत तत्वों का सही सन्तुलन बना रहे। अगर यह जरा भी बिगड़ जाए तो भवन मे निवास करने वाला व्यक्ति सुख-शांति से नहीं रह पाएगा।

पृथ्वी तत्व

पृथ्वी भी सौरमण्डल के अन्य ग्रहों मे से एक हैं। सौरमण्डल के सभी ग्रह सूर्य के अंश हैं, सभी ग्रह कि उत्पत्ति सूर्य से टूटने के बाद हुई हैं, उसी प्रकार पृथ्वी कि उत्पत्ति भी सूर्य के अंश से टूटकर लाखों वर्ष पूर्व हुई हैं। पृथ्वी एवं सौरमण्डल के अन्य सभी ग्रह सूर्य से टूट कर उसके इर्द-गिर्द घुमते हुए धीरे-धीरे सूर्य से दूर होते गयें एवं धीरे-धीरे ठंडे होते गएं। पृथ्वी सूर्य के चक्कर काटने के साथ-साथ अपनी निश्चित धुरी पर 23 डिग्री मे निरंतर घूम रही हैं। पृथ्वी पर पानी, गुरूत्वाकर्षण शक्ति तथा दक्षिण-उत्तर ध्रुविय तरंगे पृथ्वी पर एवं पृथ्वी से थोडी दूर तक सभी जीव-निर्जीव वस्तुओं को प्रभावित करती हैं। परंतु अन्य सभी ग्रहो से विपरीत पृथ्वी पर लम्बे समय तक रसायनिक क्रियाओ के फल स्वरूप पृथ्वी पर प्राकृतिक स्थलों, पर्वतों, नदियों व मैदानों आदि का जन्म हुआ, जिस्से धीरे-धीरे पृथ्वी पर जीव विकसीत होने लगे जो अन्य किसी ग्रह पर जीव के अधिक विकसीत होने के पुख्ता सबुन न होकर अभी तक सिर्फ रहस्य का विषय बन कर रह गया हैं।

इन सभी ग्रहो में सिर्फ और सिर्फ पृथ्वी ही जीवनदायिनी और पालनहार हैं। पृथ्वी कि इसी अद्वितिय क्षमता के कारण आज पृथ्वी पर जीव के निवास हेतु भवन निर्माण का कार्य होता हैं, वास्तु

सिद्धांत के अनुशार पंच माहाभूत तत्व के महत्व पूर्ण तत्व पृथ्वी तत्व के बिना भवन निर्माण संभव नही हो सकता। इस लिये वास्तु के प्राचीन ग्रन्थों मे पृथ्वी की महवत्ता को ध्यान में रख कर भवन निर्माण करने पर जोर दियागया हैं।

इस लिये हमारी संस्कृति में धरति को मां कहाजाता हैं क्योकि यह समारा भरण पोषण एवं पालन करती हैं इसी लिये गृह निर्माण से पूर्व सर्व प्रथम भूमि पूजन करने का विधान हैं।

जल तत्व

जल ही जीवन है इस बात से हर कोई परिचित हैं, क्योकि हर कोइ जानता हैं हर जीव किसी ना किसी रुप से जल तत्व से जुडा हुवा हैं एवं बगैर जल के किसी जीव का अस्तित्व लम्बे समय तक नहीं रह सकता इसी प्रकार वास्तु भी पूर्णतः जल तत्व से जुडा हुवा हैं, एवं मनुष्य को अत्याधिक प्रभावित करता हैं।

सृष्टि का मुख्य आधार जलचक्र ही हैं। सागर, नदियों, नहरों, तालाबो इत्यादि का जल वाष्प बनकर वायुमंडल से होते हुए आकाश में बादल के रूप मे निर्मित होकर वर्षा के स्वरुप में पूनः जल रूप में पृथ्वी पर आ जाता हैं। इसी कारण से जीवन चक्र कायम हैं।

विज्ञान का मुख्य सिद्वात में पानी कि संज्ञा H_2O हैं, अर्थात पानी में हाइड्रोजन के 2 अणु एवं ओक्सीजन के एक अणु होते हैं, एवं ओक्सीजन के माध्यम से प्रायः सभी जीव श्वास के माध्यम से ओक्सीजन लेते हैं। इसी लिये उसे प्राण वायु कहा जाता क्योकि यह हमे जीवीत रखता हैं।

मानव शरीर भी इन पंच महाभूत तत्वो से हि बना हैं, इसमे से कोइ एक तत्व का संतुलन बिगड जाये तो शरीर मे रोग उत्पन्न होजाते हैं, हालांकि सभी पंच तत्वो को एज दूसरे से मिलकर हि प्रभावशाली होते हैं, सभी तत्व यदि अलग-अलग हो तो उनका कोइ महत्व नहीं रह जाता। जल मानव जीवन हेतु अत्यंत आवश्यक तत्व हैं इसी लिये आदिकाल से पृथ्वी कि सारी

संस्कृतिया कि उत्पत्ती एवं विकास जल के किनारे हि हुवा हैं।
वास्तु सिद्धांत के अनुशार जल तत्व को भवन निर्माण एवं भवन निवास में हेतु इसके सन्तुलन को ध्यान मे रखना जरूरी हैं।

अग्नि

अग्नि एवं तेज ऊर्जा के कुदरति स्त्रोत हैं। ऊर्जा के बिना मानव जीवन का कोई अस्तित्व नहीं हैं। समग्र ब्रह्मांड में ऊर्जा का प्रमुख स्त्रोत एक मात्र सूर्य हैं, उस के अलावा कोई और प्रमुख स्त्रोत का अस्तित्व नहीं हैं। यही कारण हैं कि आज सूर्य के तेज से ही हमारा जीवन सुचारु रुप से प्रकाशमान हैं। वायु मंडल में व्याप्त वायुकण (धूल) और बादल इत्यादि सभी में अपनी चुम्बकीय शक्ति होती हैं जिसके कारण सब एक दूसरे की ओर आकर्षित होते रहते हैं। इसी आकर्षित होने के कारण कण एक दूसरे से पास आते और दूर होते रहते हैं, जिसके बल के कारण हि ऊर्जा उत्पन्न होती हैं। इस्से उत्पन्न होने वाली उर्जा को हि अग्नि कहा जाता हैं।
अग्नि का हमारे जीवन में बहुत महत्व हैं, इस महत्व से हर व्यक्ति भली भाति वाकिफ हैं। हमारी भारतिय संस्कृति के धार्मिक कार्यक्रम में भी अग्नि का विशेष महत्व हैं। यज्ञ, हवन, विवाह, संस्कार जेसे अन्य धार्मिक कर्मकांडो में बिना अग्नि के बिना संपन्न होना असंभव सा प्रतित होता हैं।
इसी कारण भारतिय सभ्यताओं में अग्नि को देव कहा गया हैं। अग्निको देवता मनकर उसका पोजन किया जाता हैं। क्योकि एसा माना जाता हैं, कि यदि अग्नि देव क्रोधित होजाये तो बड़े-बड़े महलों व ऊंचे-ऊंचे भवनों को धूलमें उडादे और राख बनादे। इस लिये अग्नि का पूजन कर उन्हें शांत रखने का प्रयास किया जाता हैं।
हमारे प्रमुख धर्म ग्रंथो में एक ऋग्वेद का सर्व प्रथम मंत्र ही अग्नि से शुरू होता है।

मंत्र:

अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥

भावार्थ:- सर्वप्रथम आराधन किए जाने वाले, यज्ञ को प्रकाशित करने वाले, ऋतुओं के अनुसार यज्ञ सम्पादित करने वाले, देवताओं का आह्वान करने वाले तथा धन प्रदान करने वालों में सर्वश्रेष्ठ अग्नि देवता की मैं स्तुति करता हूं।
भारतीय शास्त्रो मे उल्लेख मिलता है, कि अग्नि का संबंध मनुष्य के जन्म से लेकर मरण तक होता हैं। इसी कारण से वास्तु के पंच तत्वो में अग्नि तत्व भी समाया हुवा हैं।
यदि भवन में अग्नि तत्व कि अधिकता हो जाये, तो भवन में निवास कर्ता के बिच में मानसिक तनाव एवं परस्पत वैमनस्य रहता हैं। निवास कर्ता को छोटी-छोटी बातो पर गुस्सा आना एक स्वाभाविक लक्षण सरलता से दिखाई देता हैं। यदि आपके घर में भी एसी समस्या होती हैं।

वायु

समग्र ब्रह्मांड वायु मंडल से भरा पडा हैं, एवं हमारे जीवन मे भी वायु तत्व का अत्याधिक महत्व हैं। क्योकि साधारण व्यक्ति अन्य किसी तत्व के बिना कुछ घंटे बिता सकती हैं, लेकिन वायु तत्व के बिना व्यक्ति चंद मिनिट भी बडी मुशकील से बिता सकते हैं। क्योकि जीवन को टिकाए रखने के लिये हमारा

श्वास लेना अति आवश्यक हैं एवं यदि इस क्रम में रुकावट आजये या विच्छेदन होजाये तो हमारा जीवन समाप्त हो जाता हैं। मनुष्य हि क्यो प्राणी एवं पेड़-पौधे भी वायु के बिना क्षीण होकर समाप्ती कि और जाने लगते हैं। इस लिये वायु तत्व का संतुलन सृष्टि को सुव्यवस्थित रुप में चलाने के लिये वायु क योगदान अधिक महत्वपूर्ण है। मनुष्य के जीवन में प्रत्येक क्रिया-कलाप में कहीं न कहीं पंच महाभूतों का संयोग अवश्य पाया जाता हैं। इसी लिये अन्य किसी ग्रह पर आजतक लम्बे समय तक मनुष्य को पैर टिकाना मुश्किल नजर आरहा हैं, इसी कारण से वहां जीवन संभव नहीं हो पाया हैं। इसी तरहा वास्तु में वायु तत्व का अधिक महत्व हैं।

यदि घर में वायु तत्व के संतुलन में गडबडी होतो भवन में निवास कर्ता को धन कि कमी एवं विभिन्न प्रकार के रोग देखने को मिलते हैं। यदि घर में वायु तत्व कि अधिकता होतो तो व्यक्ति के विचारों में स्थिरता कि कमी पाई जाती हैं, व्यक्ति एक साथ अनेक कार्य करने हेतु प्रेरिततो होता हैं परंतु उसे पूर्ण करने हेतु उचित परिश्रम नहीं कर पाता। इस लिये घर में वायु तत्व का संतुलन बनाये रखे।

आकाश

आकाश तत्व का कोई अंत नहीं हैं, वह अनंत हैं। आकाश तत्व के भीतर अंदर नजा ने कितनी आकाश गंगाए समाइ हुइ हैं, जिनमें सूर्य के समान या उस्से बडे सैकड़ों सूर्य हैं। हमारे जीवन मे सुख-समृद्धि एंव शांति प्राप्त करने में आकाश का महत्वपूर्ण स्थान होता हैं। इस लिये व्यक्ति को अपने भवन में पंच महाभूत तत्व का उचित सम्तुलन बनाए रखना चाहिये जिस्से हमारे जीवन मे हम सुख-समृद्धि-शांति को प्राप्त कर उन्नति के शिखर को प्राप्त कर सके।

सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

राम नाम की महिमा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक कथा के अनुशार:

एक संत महात्मा श्यामदासजी रात्रि के समय में 'श्रीराम' नाम का अजपाजाप करते हुए अपनी मस्ती में चले जा रहे थे। जाप करते हुए वे एक गहन जंगल से गुजर रहे थे।

विरक्त होने के कारण वे महात्मा बार-बार देशाटन करते रहते थे। वे किसी एक स्थान में अधिक समय नहीं रहते थे। वे इश्वर नाम प्रेमी थे। इस लिये दिन-रात उनके मुख से राम नाम जप चलता रहता था। स्वयं राम नाम का अजपाजाप करते तथा औरों को भी उसी मार्ग पर चलाते।

श्यामदासजी गहन जंगल में मार्ग भूल गये थे पर अपनी मस्ती में चले जा रहे थे कि जहाँ राम ले चले वहाँ....। दूर अँधेरे के बिच में बहुत सी दीपमालाएँ प्रकाशित थीं। महात्मा जी उसी दिशा की ओर चलने लगे।

निकट पहुँचते ही देखा कि वटवृक्ष के पास अनेक प्रकार के वाद्ययंत्र बज रहे हैं, नाच -गान और शराब की महफिल जमी है। कई स्त्री पुरुष साथ में नाचते-कूदते-हँसते तथा औरों को हँसा रहे हैं। उन्हें महसूस हुआ कि वे मनुष्य नहीं प्रेतात्मा हैं। श्यामदासजी को देखकर एक प्रेत ने उनका हाथ पकड़कर कहाः ओ मनुष्य ! हमारे राजा तुझे बुलाते हैं, चल। वे मस्तभाव से राजा के पास गये जो सिंहासन पर बैठा था। वहाँ राजा के इर्द-गिर्द कुछ प्रेत खड़े थे। प्रेतराज ने कहाः तुम इस ओर क्यों आये? हमारी मंडली आज मदमस्त हुई है, इस बात का तुमने विचार नहीं किया? तुम्हें मौत का डर नहीं है?

अट्टहास करते हुए महात्मा श्यामदासजी बोलेः मौत का डर? और मुझे? राजन् ! जिसे जीने का मोह हो उसे मौत का डर होता हैं। हम साधु लोग तो मौत को आनंद का विषय मानते हैं। यह तो देहपरिवर्तन हैं जो प्रारब्धकर्म के बिना किसी से हो नहीं सकता।

प्रेतराजः तुम जानते हो हम कौन हैं?

महात्माजीः मैं अनुमान करता हूँ कि आप प्रेतात्मा हो।

प्रेतराजः तुम जानते हो, लोग समाज हमारे नाम से काँपता

हैं।

महात्माजीः प्रेतराज ! मुझे मनुष्य में गिनने की गलती मत करना। हम जिंदा दिखते हुए भी जीने की इच्छा से रहित, मृततुल्य हैं। यदि जिंदा मानों तो भी आप हमें मार नहीं सकते। जीवन-मरण कर्माधीन हैं। मैं एक प्रश्न पूछ सकता हूँ?

महात्मा की निर्भयता देखकर प्रेतों के राजा को आश्चर्य हुआ कि प्रेत का नाम सुनते ही मर जाने वाले मनुष्यों में एक इतनी निर्भयता से बात कर रहा हैं। सचमुच, ऐसे मनुष्य से बात करने में कोई हरकत नहीं। प्रेतराज बोलाः पूछो, क्या प्रश्न है?

महात्माजीः प्रेतराज ! आज यहाँ आनंदोत्सव क्यों मनाया जा रहा है?

प्रेतराजः मेरी इकलौती कन्या, योग्य पति न मिलने के कारण अब तक कुआँरी हैं। लेकिन अब योग्य जमाई मिलने की संभावना हैं। कल उसकी शादी हैं इसलिए यह उत्सव मनाया जा रहा हैं।

महात्मा ने हँसते हुए कहाः तुम्हारा जमाई कहाँ हैं? मैं उसे देखना चाहता हूँ।"

प्रेतराजः जीने की इच्छा के मोह के त्याग करने वाले महात्मा ! अभी तो वह हमारे पद (प्रेतयोनी) को प्राप्त नहीं हुआ हैं।

वह इस जंगल के किनारे एक गाँव के श्रीमंत (धनवान) का पुत्र हैं। महादुराचारी होने के कारण वह इसवक्त भयानक रोग से पीड़ित हैं।

कल संध्या के पहले उसकी मौत होगी। फिर उसकी शादी मेरी कन्या से होगी। इस लिये रात भर गीत-नृत्य और मद्यपान करके हम आनंदोत्सव मनायेंगे।

श्यामदासजी वहाँ से विदा होकर श्रीराम नाम का अजपाजाप करते हुए जंगल के किनारे के गाँव में पहुँचे। उस समय सुबह हो चुकी थी।

एक ग्रामीण से महात्मा नें पूछाः इस गाँव में कोई श्रीमान् का बेटा बीमार हैं?

ग्रामीणः हाँ, महाराज ! नवलशा सेठ का बेटा सांकलचंद एक वर्ष से रोगग्रस्त हैं। बहुत उपचार किये पर उसका रोग ठीक नहीं होता।

महात्माः क्या वे जैन धर्म पालते हैं?

ग्रामीणः उनके पूर्वज जैन थे किंतु भाटिया के साथ व्यापार करते हुए अब वे वैष्णव हुए हैं।

महात्मा नवलशा सेठ के घर पहुंचे सांकलचंद की हालत गंभीर थी। अन्तिम घड़ियाँ थीं फिर भी महात्मा को देखकर माता-पिता को आशा की किरण दिखी। उन्होंने महात्मा का स्वागत किया। सेठपुत्र के पलंग के निकट आकर महात्मा रामनाम की माला जपने लगे। दोपहर होते-होते लोगों का आना-जाना बढ़ने लगा। महात्मा ने पूछाः क्यों, सांकलचंद ! अब तो ठीक हो?

सांकलचंद ने आँखें खोलते ही अपने सामने एक प्रतापी संत को देखा तो रो पड़ा। बोलाः बापजी ! आप मेरा अंत सुधारने के लिए पधारे हो। मैंने बहुत पाप किये हैं। भगवान के दरबार में क्या मुँह दिखाऊँगा? फिर भी आप जैसे

संत के दर्शन हुए हैं, यह मेरे लिए शुभ संकेत हैं। इतना बोलते ही उसकी साँस फूलने लगी, वह खाँसने लगा।

बेटा ! निराश न हो भगवान राम पतित पावन है। तेरी यह अन्तिम घड़ी हैं। अब काल से डरने का कोई कारण नहीं। खूब शांति से चित्तवृत्ति के तमाम वेग को रोककर श्रीराम नाम के जप में मन को लगा दे। अजपाजाप में लग जा।

शास्त्र कहते हैं-

चरितम् रघुनाथस्य शतकोटिम् प्रविस्तरम्।
एकैकम् अक्षरम् पूण्या महापातक नाशनम्।।

अर्थातः सौ करोड़ शब्दों में भगवान राम के गुण गाये गये हैं। उसका एक-एक अक्षर ब्रह्महत्या आदि महापापों का नाश करने में समर्थ हैं।

दिन ढलते ही सांकलचंद की बीमारी बढ़ने लगी। वैद्य-हकीम बुलाये गये। हीरा भस्म आदि कीमती औषधियाँ दी गयीं। किंतु अंतिम समय आ गया यह जानकर महात्माजी ने थोड़ा नीचे झुककर उसके कान में रामनाम लेने की याद दिलायी। राम बोलते ही उसके प्राण पखेरू उड़ गये। लोगों ने रोना शुरु कर दिया। श्मशान यात्रा की तैयारियाँ होने लगीं। मौका पाकर महात्माजी वहाँ से चल दिये।

नदी तट पर आकर स्नान करके नामस्मरण करते हुए वहाँ से रवाना हुए। शाम ढल चुकी थी। फिर वे मध्यरात्रि के समय जंगल में उसी वटवृक्ष के पास पहुँचे। प्रेत समाज उपस्थित था। प्रेतराज सिंहासन पर हताश होकर बैठे थे। आज गीत, नृत्य, हास्य कुछ न था। चारों ओर करुण आक्रंद हो रहा था, सब प्रेत रो रहे थे। हास्य कुछ न था। चारों ओर करुण आक्रंद हो रहा था, सब प्रेत रो रहे थे।

महात्मा ने पूछाः प्रेतराज ! कल तो यहाँ आनंदोत्सव था, आज शोक-समुद्र लहरा रहा हैं। क्या कुछ अहित हुआ हैं?

प्रेतराजः हाँ भाई ! इसीलिए रो रहे हैं। हमारा सत्यानाश हो गया। मेरी बेटी की आज शादी होने वाली थी। अब वह कुँआरी रह जायेगी

महात्मा ने पूछाः प्रेतराज ! तुम्हारा जमाई तो आज मर गया हैं। फिर तुम्हारी बेटी कुँआरी क्यों रही?

प्रेतराज ने चिढ़कर कहाः तेरे पाप से। मैं ही मूर्ख हूँ कि मैंने कल तुझे सब बता दिया। तूने हमारा सत्यानाश कर दिया।

महात्मा ने नम्रभाव से कहाः मैंने आपका अहित किया यह मुझे समझ में नहीं आता। क्षमा करना, मुझे मेरी भूल बताओगे तो मैं दुबारा नहीं करूँगा।

प्रेतराज ने जलते हृदय से कहाः यहाँ से जाकर तूने मरने वाले को नाम स्मरण का मार्ग बताया और अंत समय भी राम नाम कहलवाया। इससे उसका उद्धार हो गया और मेरी बेटी कुँआरी रह गयी।

महात्माजीः क्या? सिर्फ एक बार नाम जप लेने से वह प्रेतयोनि से छूट गया? आप सच कहते हो?

प्रेतराजः हाँ भाई ! जो मनुष्य राम नामजप करता हैं वह राम नामजप के प्रताप से कभी हमारी योनि को प्राप्त नहीं होता। भगवन्नाम जप में नरकोद्धारिणी शक्ति हैं। प्रेत के द्वारा रामनाम का यह प्रताप सुनकर महात्माजी प्रेमाश्रु बहाते हुए भाव समाधि में लीन हो गये। उनकी आँखे खुलीं तब वहाँ प्रेत-समाज नहीं था, बाल सूर्य की सुनहरी किरणें वटवृक्ष को शोभायमान कर रही थीं।

कबीर पुत्र कमाल की एक कथा हैं।

एक बार राम नाम के प्रभाव से कमाल द्वारा एक कोढ़ी का कोढ़ दूर हो गया। कमाल समझते हैं कि रामनाम की महिमा मैं जान गया हूँ। कमाल के इस कार्य से किंतु कबीर जी प्रसन्न नहीं हुए। कबीरजी ने कमाल को तुलसीदास जी के पास भेजा।

तुलसीदासजी ने तुलसी के पत्र पर रामनाम लिखकर वह तुलसी पत्र जल में डाला और उस जल से 500 कोढ़ियों को ठीक कर दिया।

कमान समझ ने लगा कि तुलसीपत्र पर एक बार रामनाम लिखकर उसके जल से 500 कोढ़ियों को ठीक किया जा सकता है, रामनाम की इतनी महिमा हैं। किंतु कबीर जी इससे भी संतुष्ट नहीं हुए और उन्होंने कमाल को भेजा संत सूरदास जी के पास।

संत सूरदास जी ने गंगा में बहते हुए एक शव के कान में **राम** शब्द का केवल **र** कार कहा और शव जीवित हो गया। तब कमाल ने सोचा कि **राम** शब्द के **र** कार से मुर्दा जीवित हो सकता हैं। यह राम शब्द की महिमा हैं।

तब कबीर जी ने कहाः यह भी नहीं। इतनी सी महिमा नहीं है राम शब्द की।

भृकुटि विलास सृष्टि लय होई।

जिसके भृकुटि विलास मात्र से प्रलय हो सकता है, उसके नाम की महिमा का वर्णन तुम क्या कर सकोगे?

राम नाम महिमा में एक अन्य कथा:

समुद्रतट पर एक व्यक्ति चिंतातुर बैठा था, इतने में उधर से विभीषण निकले। उन्होंने उस चिंतातुर व्यक्ति से पूछाः क्यों भाई ! तुम किस बात की चिंता में पड़े हो?

मुझे समुद्र के उस पार जाना हैं परंतु मेरें पास समुद्र पार करने का कोई साधन नहीं हैं। अब क्या करूँ मुझे इस बात की चिंता हैं। अरे भाई, इसमें इतने अधिक उदास क्यों होते हो?

ऐसा कहकर विभीषण ने एक पत्ते पर एक नाम लिखा तथा उसकी धोती के पल्लू से बाँधते हुए कहाः इसमें मेनें तारक मंत्र बाँधा हैं। तू इश्वर पर श्रद्धा रखकर तनिक भी घबराये बिना पानी पर चलते आना। अवश्य पार लग जायेगा।

विभीषण के वचनों पर विश्वास रखकर वह व्यक्ति समुद्र की ओर आगे बढ़ने लगा। वहं व्यक्ति सागर के सीने पर नाचता-नाचता पानी पर चलने लगा। वह व्यक्ति जब समुद्र के बीचमें आया तब उसके मन में संदेह हुआ कि विभीषण ने ऐसा कौन सा तारक मंत्र लिखकर मेरे पल्लू से बाँधा हैं कि मैं समुद्र पर सरलता से चल सकता हूँ। इस मुझे जरा देखना चाहिए।

उस व्यक्ति ने अपने पल्लू में बँधा हुआ पत्ता खोला और पढ़ा तो उस पर दो अक्षर में केवल **राम** नाम लिखा हुआ था। **राम** नाम पढ़ते ही उसकी श्रद्धा तुरंत ही अश्रद्धा में बदल गयीः अरे ! यह कोई तारक मंत्र हैं ! यह तो सबसे सीधा सादा राम नाम हैं ! मन में इस प्रकार की अश्रद्धा उपजते ही वह व्यक्ति डूब कर मरगया।

कथा सार: इस लिये विद्वानो ने कहां हैं श्रद्धा और विश्वास के मार्ग में संदेह नहीं करना चाहिए क्योकि अविश्वास एवं अश्रद्धा ऐसी विकट परिस्थितियाँ निर्मित हो जाती हैं कि मंत्र जप से काफी ऊँचाई तक पहुँचा हुआ साधक भी विवेक के अभाव में संदेहरूपी षड्यंत्र का शिकार होकर अपना अति सरलता से पतन कर बैठता हैं। इस लिये साधारण मनुष्य को तो संदेह की आँच ही गिराने के लिए पर्याप्त हैं। हजारों-लाखों-करोडों मंत्रो की साधना जन्मों-जन्म की साधना अपने सदगुरु पर संदेह करने मात्र से नष्ट हो जाती है।

तुलसीदास जी कहते हैं-

राम ब्रहम परमारथ रूपा।

अर्थात्: ब्रहम ने ही परमार्थ के लिए राम रूप धारण किया था।

रामनाम की औषधि खरी नियत से खाय।

अंगरोग व्यापे नहीं महारोग मिट जाय।।

रत्नों का अद्भुत रहस्य

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

लहसुनिया

केतु का रत्न लहसुनिया केतु ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं। लहसुनिया को केतु का रत्न माना गया है।

हिन्दी मे :- लहसुनिया

सस्कृत मे :- विदुराज, वैदूर्य, केतु रत्न, विडालाक्ष, वायज, अभ्ररोह, राष्ट्क, मेघखरांकुर, बालसूर्य आदि नामो से जाना जाता हैं।

अरबी मे :- एन अलहिर

अंग्रेजी :- केटस आई

वैदूर्य रत्न की उपरी सतह पर सफेद रंग का सूत्र या धारी दिखाई देती हैं। यह धारी वैदूर्य को हिलाने-डुलाने पर हिलती हुई प्रतीत होती है। सामान्यतः वैदूर्य को देखने से यह बिल्ली की आंख के समान दिखाई देता हैं इस लिये इसे अंग्रजी केटस आई कहां जाता हैं।

प्राप्ति स्थान:

लहसुनिया मुख्यतः भारत, श्रीलंका, ब्राजील, अमेरिका, युराल, चीन तथा बर्मा में प्राप्त होता है। सर्वश्रेष्ठ लहसुनिया भारत में उड़ीसा से प्राप्त होते है। उड़ीसा व श्रीलंका से प्राप्त होने वाले लहसुनिया की अंतराष्ट्रिय बाजारो में अधिक मांग रहती है।

लहसुनिया के लाभ

- वैदूर्य रत्न धारण करने से यह वायु-गोला तथा पित्त जन्य रोगों का नाशक होता हैं।
- जिन व्यक्तियों को सरकारी कार्यों में बाधाएं आरही हो उन्हें वैदूर्य रत्न धारण करने से कार्य में सफलता प्राप्त होती हैं।
- वैदूर्य रत्न धारण करने से आकस्मिक दुर्धटना आदि से रक्षा होती हैं।
- लहसुनिया धारण करने से दुःख दरिद्रता, आधि-व्याधि का अंत होता हैं।
- लहसुनिया धारण करने से धारण कर्ता को भूत-प्रेत आदि बाधाएं पीड़ा नहीं करती हैं।
- लहसुनिया धारण करने से नेत्र रोग में लाभदायक होता हैं।
- लहसुनिया धारण करने से पांडुरोग में शरीर का पीलापन शीघ्र कम होने लगता हैं।
- प्रसव के समय गर्भवती स्त्री के प्रसव पीड़ा में बालों में लहसुनिया बांधने से प्रसव शीघ्र हो जाता हैं।
- लहसुनिया धारण करने से श्वांस रोग, न्यूमोनिया आदि रोगो में विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।
- लहसुनिया धारण करने से उसका शुभ-अशुभ परिणाम शीघ्र दिखाता हैं।
- लहसुनिया धारण करने से पापों का नाश होता हैं।
- लहसुनिया धारण करने से बुरी नजर से बचाता हैं।
- लहसुनिया धारण करने से रक्त से सम्बंधित रोग व दोष दूर होते हैं।
- लहसुनिया धारण करने से फोड़े-फुंदी आदि नहीं होते।

मान्यता:

- उत्तम गुणो वाले लहसुनिया में अधिक चमकीलापन तथा चिकनाहट होती हैं।
- लहसुनिया वजन में सामान्य से ज्यादा वजनदार प्रतीत होता हैं।
- लहसुनिया की उपरी सतह पर सफेद रंग का सूत के समान धारी होती हैं।
- लहसुनिया को कपड़े पर रगड़ने से इसकी चमक में वृद्धि होती हैं।

दोष:

- जिस वैदूर्य में अन्य रंग के छीटे या धब्बे हो, एसे वैदूर्य को धारण करने से रोगकारक होता हैं।

- जिस वैदूर्य में गड्ढा हो एसे वैदूर्य को धारण करने से स्वास्थ्य के लिए हाकिकारक होता हैं।
- जिस वैदूर्य में चीर या आडी, तिरछी, खडी रेखाएं हो, एसे वैदूर्य को धारण करना क्षतिकारक होता हैं।
- जिस वैदूर्य अबरक जैसी आभा दिखाई देती हो, एसे वैदूर्य को धारण करना वर्जित माना गया हैं।
- जिस वैदूर्य में चमक न हों देखने में उसकी आभा फीकी नजर आती हों, एसे वैदूर्य को धारण करने से धन का नाश होता हैं।
- जो वैदूर्य खंडित अर्थात टूटा-फूटा हो, छेद हो, एसा वैदूर्य धारण करने से शत्रु भय उत्पन्न होता हैं।
- जिस वैदूर्य में लाल रंग के छीटे या धब्बे हो, उसे धारणकरनेसेराजभय,कारावास जाने के योग बनाता हैं।
- जिस वैदूर्य में सफेद रंग के छीटे या धब्बे हो, एसा वैदूर्यधारणकरने से आयु क्षिण करने वाला होता हैं।
- जिस वैदूर्य में चीर या आडी, तिरछी, खडी रेखाएं हो, एसे वैदूर्य को धारण करने से शत्रु पक्ष से हानि होती हैं।
- जिस वैदूर्य में ज्वाला दिखाई देती हो, एसे वैदूर्य को धारण करने से पत्नी को हानि होती हैं।
- जिस वैदूर्य में शहद के रंग जैसे छींटे या धब्बे दिखाई देते हो, एसा वैदूर्य धारण करने से राजकीय कार्यो में रुकावटे पैदा करता हैं।
- जिस वैदूर्य में पांच से अधिक सूत या धारिया दिखाई देती हो, एसा वैदूर्य धारण करने से अनिष्टकारी होता हैं।
- जिस वैदूर्य में दिखने वाला सूत या धारिया उबड़-खाबड़ या टूटी हुई दिखाई देती हो, एसा वैदूर्य धारण करने से नेत्र रोग होता हैं।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

>> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. **28.00** **से** Rs.**100.00**

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

प्रकृति की अलौकिक देन रुद्राक्ष धारण करने से लाभ

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष:



- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को कामदेव का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को इन्द्र का स्वरुप भी माना गया हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से मनुष्य की संपूर्ण मनोकामनाएं सिद्ध होती हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अतुल्य धन-संपत्तिअ प्राप्त होती हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से व्यक्ति संपूर्ण धातुओं की रसायनादिक सिद्धियों का ज्ञाता बन जाता हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से व्यक्ति को मान-सम्मान, यश, पद-प्रतिष्ठा, आकर्षक व्यक्तित्व की प्राप्ति होती हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष का विशेषज्ञ की सलाह से दूध के साथ प्रयोग लाभकरी सिद्ध होता हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से समस्त प्रकार की शक्ति व सिद्धियों की प्राप्ति में विशेष सहायता प्राप्त होती हैं।

त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ईं यां आप ओम्॥

चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष:



- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को शिव का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। विद्वानो ने चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को हनुमान का स्वरुप भी माना हैं। इस लिए चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को हनुमान रुद्राक्ष के नाम से भी जाना जाता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से सकल अभीष्ट सिद्धियों की प्राप्ति होती हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष की उत्पत्ति के बारे में उल्लेख हैं की भगवान शिव के डमरु से चौदह प्रत्याहार निकले थे तथा कुछ प्रमुख शास्त्रों में भी एक से चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष का उल्लेख मिलता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार के कष्टों का निवारण हो जाता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से मनुष्य विभिन्न रोगों से मुक्ति मिलती हैं और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से व्यक्ति को सभी क्षेत्रों में उन्नति प्राप्त होती हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से परम पद की प्राप्ति होती हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से शनि ग्रह से संबंधित अशुभ प्रभाव की शांति होती हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शत्रु व दुष्टों का नाश होता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष धारण को मस्तक पर धारण करने से समस्त पापों का नाश होता हैं।

चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ औं स्फे खत्फैं हस्त्रौं हसत्फ्रैः॥

जो मनुष्य पृथ्वी पर रुद्राक्ष को मंत्र सहित धारण करते हैं वे रुद्रलोक में जाकर वास करते हैं तथा जो मंत्र रहित रुद्राक्ष धारण करते हैं वे घोर नरक के भागी होते हैं।

उपरोंक्त रुद्राक्षों को धारण करने वाले मनुष्य को भूत, प्रत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि का भय नहीं रहता। रुद्राक्ष धारण करता मनुष्य पर देवी-देवता शीघ्र प्रसन्न होते हैं। व मनुष्य की समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

वर्णमाला के अनुसार स्वप्न फल विचार

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...



- स्वप्न में धमाका सुनना कष्ट बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में धतूरा खाते देखना संकट से रक्षा होने का संकेत है।
- स्वप्न में धनुष देखना सभी कर्मो में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में धब्बे देखना शुभ संकेत है।
- स्वप्न में धार्मिक आयोजना देखना शुभ संकेत है।
- स्वप्न में धागा देखना कार्य में वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में धुरी देखना सामाजिक मान सम्मान में वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में धुआ देखना परेशानीयां बढ़ने और संकट में फंसने का संकेत है।
- स्वप्न में धुंध देखना शुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में धुन सुनना (मधुर) परेशानी बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में धूल देखना यात्रा में लाभ मिलने का संकेत हैं।

- स्वप्न में धोबी देखना कार्य में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में धोती देखना यात्रा पर जाने का संकेत है।



- स्वप्न में नल खुला देखना कार्य में शीघ्र सफलता मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नल बंद देखना कार्य में विघ्न-बाधा आने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नरक देखना कठिनाइयाँ बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में नगीना देखना शुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में नगाडा देखना धन लाभ और मान-सम्मान मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में नमाज़ पढ़ते देखना पूराने कष्ट दूर हो कर शान्ति प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में नमक खाते देखना झगडे में फँसने का संकेत है।
- स्वप्न में नमक देखना पुरानी बीमारी दूर हों और कार्य क्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होने का संकेत है।
- स्वप्न में नमकदानी देखना गृहस्थ सुख में वृद्धि का संकेत हैं।
- स्वप्न में स्वयं को नशे में देखना धन वृद्धि हों होने लेकिन समस्या बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में नरगिस का फूल देखना पारिवारिक सुख वृद्धि का संकेत हैं।
- स्वप्न में नदी-नाले में गिरते देखना अनेक संकट आने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नक़ल स्वयं को करते देखना कार्य में असफलता मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नक़ल अन्य को करते देखना यात्रा में रुकावट व बनते काम बिगडने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नक्शा बनाना कोई नई योजनाये शुरू होने का संकेत है।
- स्वप्न में नकसीर बहते देखना मानसिक परेशानिया बढ़ने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नकाब लगाना किसी गंभीर बीमारी के आगमन का संकेत हैं।
- स्वप्न में नट (कलाबाज़) को देखना पारिवारिक सुख शाति बढ़ने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नसवार सूंघते देखना मानसिक परिशानिया बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में नदी देखना भविष्य में सुखों की प्राप्ति होने का संकेत है।
- स्वप्न में नदी में स्नान करते देखना कार्य में सफलता मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नदी में गिरते देखना कार्य में किसी रुकावट के बाद में सफलता मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नहर खोदना कार्य सम्बन्धी नई योजनाये मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नग्न होते देखना भोग-विलास के साधन बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में नदी देखना दुःख दूर हो कर धन मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नाखून टूटते देखना सफलता विलम्ब से मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नाक बहुत बड़ी देखना मान सम्मान बढ़ने और पदौन्नति होने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नाखून देखना कार्य में बाधा आने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नाक से खून बहते देखना धन वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में नाटक देखना गृहस्थ का सुख में वृद्धि लेकिन भविष्य अनिश्चित होने का संकेत है।
- स्वप्न में नाटक में भाग लेते देखना स्वजन से धोखा मिलने का संकेत हैं।

- स्वप्न में नारियल देखना धन लाभ, धार्मिक आयोजना में शामिल होने व स्वादिष्ट भोजन मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नाक पर चोट लगते देखना मान सम्मान में हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में नासूर देखना किसी बीमारी से छुटकारा मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नापतोल करना व्यापार में घाटा होने का संकेत है।
- स्वप्न में नाग को बिल में जाते देखना धन वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में नाग को बिल से बाहर निकलते देखना धन हानि का संकेत है।
- स्वप्न में नाग का डंक मारना समाज में मान सम्मान बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में नाग को घर में देखना उस देखे गए स्थान की पवित्रता का संकेत है।
- स्वप्न में किसी को नाग उठाये देखना धन-संपत्ति प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में नाना-नानी को देखना पारिवारिक सुख बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में नाडा बंधते-टूटते देखना पारिवारिक कलेश बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में नाला देखना कार्य में सफलता मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नाव देखना गृहस्थ सुख में वृद्धि का संकेत हैं।
- स्वप्न में नाव में बैठना अनेक संकट से ग्रस्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में नाई से हजामत बनवाते देखना किसी से धोखा मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नारद देखना धन लाभ लेकिन लड़ाई झगडा होने का संकेत है।
- स्वप्न में नाभि देखना कार्य क्षेत्र में प्रगति तथा धन लाभ होने का संकेत है।
- स्वप्न में निरादर होते देखना मान सम्मान बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में निशाना हाथ लगते देखना पुरानी इच्छा पूर्ण होने का संकेत है।
- स्वप्न में नितम्ब देखना गृहस्थ सुख में वृद्धि होने का संकेत हैं।
- स्वप्न में नीम का वृक्ष देखना पुरानी बिमारी दूर होने का संकेत है।
- स्वप्न में नीलम रत्न देखना शुभ समाचार मिलने और दुश्मन के परस्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में नींद में सोते या नींद से उठाते देखना धन लाभ होने का संकेत है।
- स्वप्न में नीलकंठ देखना मान सम्मान बढ़ने का संकेत है व अविवाहित हैं तो शीघ्र विवाह होने का संकेत है।
- स्वप्न में नींबू काटते या निचोड़ते देखना धार्मिक कार्य में सामिल होने का संकेत है।
- स्वप्न में नुकीली चीज़ से चोट लगते देखना किसे से वाद विवाद में फसने का संकेत है।
- स्वप्न में नुकीला जूता देखना समाज में मान सम्मान बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में नेवला देखना पुराने संकट समाप्त हो एवं सूवर्ण की प्राप्ति का संकेत हैं।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

अंक ज्योतिष का रहस्य

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

मूलांक 9 स्वामी मंगल

मूलांक 9
स्वामी ग्रह:- मंगल
मित्र अंक:-1, 2, 3, 4, 7
शत्रु अंक:- 5
सम:- 6, 8
स्व अंक:- 9
तत्व:- अग्नि



यदि किसी व्यक्ति का जन्म किसी भी मास की 9, 18 व 27 तारीख को हुवा हैं तो उनका मूलांक 9 होता है।

मूलांक 9 अंक के व्यक्ति का जीवन अधिक साहसी और अनुशासन प्रिय विचार धारा वाले होते हैं। व्यक्ति को कार्य क्षेत्र में एकाधिकार वाले क्षेत्रों का चुनाव करना पसंद करता हैं।

मूलांक 9 का स्वामी ग्रह मंगल हैं, इस लिए मूलांक 9 में जन्म लेने वाले व्यक्ति के उपर मंगल का विशेष प्रभाव देखने को मिलता हैं, क्योकि 9 मूलांक में जन्म लेने के कारण व्यक्ति के भितर मंगल ग्रह की अनुकूलता के कारण मंगल ग्रह के गुणों का समावेश अन्य ग्रहों की अपेक्षा अधिक मात्रा में हो जाता हैं। मंगल ग्रह के इस विशेष प्रभावि गुणों के कारण ही व्यक्ति को जीवन में शारीरिक और मानसिक रूप से धनी होते हैं। इनका साहस कभी-कभी इतना अधिक अधिक हो जाता हैं कि दुस्साहस का रूप धारण कर लेता हैं।

मूलांक 9 वाले व्यक्ति अपने अद्भुत एवं चुनौती-भरे कार्यो से समाज में नाम अमर कर जाते हैं। मूलांक 9 वाले व्यक्ति ऊपर से चाहें प्रचंड, कठोर एवं विस्फोटक दिखाई देते हो, लेकिन अंदर से एकदम कोमल हृदय के होते हैं। मूलांक 9 वाले व्यक्ति अनुशासन को जीवन में सर्वोपरि मानते हैं और अनुशासन व्यवस्था से हर कार्य को पूरा करने में विश्वास रखते हैं।

मूलांक 9 वाले व्यक्ति जंग में या मुकाबले में हारकर, परास्त होकर या नीचा देखकर जीने वाले नहीं। व्यक्ति हर जंग का डंट कर सामना करने में माहीर होते हैं।

मूलांक 9 वाले व्यक्ति धीरे-धीरे धुआं छोड़ती लकड़ी की तरह ये जींदगी व्यतीत करना नहीं नहीं जानते, मगर बारूद की तरह भभक कर जीना और जलना जानते हैं। क्षण-भर के लिए ही सही, पर उस एक क्षण में ही दुनियाँ को चकाचौंध करने में विश्वास रखते हैं।

ज्योतिष में मंगल ग्रह को सेनापति माना गया हैं, इस कारण मूलांक 9 वाले व्यक्ति के अंदर भी सेनापति, मुखिया, नेता किसी संस्था का प्रमुख आदि बनने का नेतृत्व करने का विशेष गुण होता हैं।

मूलांक 9 वाले व्यक्ति अदम्य साहसी होने के कारण किसी भी मुश्किल या परेशानी में विचलित नहीं होती यह लोग उस कठिनाईयों को आसानी से पार कर लेते हैं।

मूलांक 9 वाले व्यक्ति स्वभाव से थोडे तेज होते हैं, व्यक्ति हर कार्य को फुर्ती एवं जल्दबाजी से पुरा करने का प्रयत्न करते हैं।

मूलांक 9 वाले व्यक्ति स्वभाव से साहसी होने से ये किसी मुश्किल से मुश्किल कार्य को भी करने से नहीं हिचकिचाते मूलांक 9 वाले व्यक्ति के उचे पद एवं प्रतिष्ठा के कारण उनके इर्द-गिर्द एसें लोग मंडराते रहते हैं जो उनकी खुशामद या चापलूसी करते हो जिस कारण उन्हें कभी-कभी नुकसान भी उठाना पड़ता हैं।

मूलांक 9 वाले व्यक्ति को क्रोध शीघ्र आता हैं जिस कारण लोगों से विरोध कर बैठते हैं। व्यक्ति से शत्रुता कम लोगों से ही होती हैं क्योकि मूलांक 9 वाले व्यक्ति अपने शत्रुओं का दमन करने के लिए सदैव तैयार ही होते हैं। व्यक्ति का स्वभाव से उग्र होते हुवे भी उनकी प्रकृति चंचल होती हैं। मूलांक 9 वाले व्यक्ति यदि अपने कार्य क्षेत्र में विशेष ध्यान दे और नीति से कार्य करें तो उनके भाग्य के बल से उनके सुख साधनो में निरंतर वृद्धि होती रहेगी। मूलांक 9 वाले व्यक्ति साहसी, पराक्रमी तथा संघर्षशील होते हैं। इस कारण इन्हें संघर्ष के पश्चात सफलता अवश्य मिलती है।

मूलांक 9 वाले व्यक्ति को हमेशा सजग और सतर्क रहना चाहिए अन्यथा जीवन में व्यकि के साथ चोट, घाव, शस्त्राघात, दुर्घटना इत्यादि घटनाएं होती रहती है।

मूलांक 9 वाले व्यक्ति को किसी से वाद-विवाद इत्यादि यथा संभव टालना चाहिए अन्यथा यह लोग जीवन पर्यन्त झगड़े वाद-विवाद कोर्ट-कचहरी, थाना-पुलिस आदि के चक्करों में ही उलझ कर रह जाते हैं। क्योकि मूलांक 9 वाले व्यक्ति उग्र स्वभाव के होने के कारण यह लोग जल्द किसी से भी भिड़ जाते हैं। व्यक्ति अपने से ज्यादा बलशाली व्यक्ति से भिड़ नें में भी नहीं कतराते। मूलांक 9 वाले व्यक्ति छोटे-बडे किसी प्रकार के वाद-विवाद में अग्रस्त हो जाते हैं। व्यक्ति को अपनी निंदा या आलोचना सुनना पसंद नहीं होता।

मूलांक 9 वाले व्यक्ति प्रेमसंबंधो के अधिक इच्छुक होते हैं। मूलांक 9 वाले व्यक्ति प्रेम में अंधे हो जाते हैं यहीं कारण हैं की यह लोग अपने प्रेमी के लिए सब कुछ न्योछावर कर देते हैं। यही कारण हैं की मूलांक 9 वाले व्यक्ति को कोई भी स्त्री या पुरुष आसानी से मूर्ख बना सकती है। मूलांक 9 वाले व्यक्ति का दांपत्य जीवन अधिक सुखमय नहीं रहता। इस लिए गृहस्थ जीवन में न्युनाधिक रूप से विपरीतता बनी रहती हैं। फलस्वरूप व्यक्ति बात-बात में झल्ला उठते हैं, क्रोधित हो जाना आदि संभव हैं, अतः व्यक्ति यदि अपने आप पर पूर्ण नियंत्रण रखें, तो निश्चित तौर पर अपना जीवन सफल, उन्नत एवं श्रेष्ठ बना सकते हैं।

शुभ दिन:

शुभ वर्ष 18,27,36,45,54,63,72 वां वर्ष हैं, तिथि 9,18,27 शुभ दायक होती हैं, किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये इन्हीं तिथि का प्रयोग करना चाहिये, इन तिथियों में मंगलवार का दिन पड़े तो बहुत शुभ होता हैं।

स्वास्थ्य:

व्यक्ति चर्मरोग तथा नासारंध्र से संबंधित जुकाम आदि रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। मस्तिश्क संबंधित रोग, जननेन्द्रिय संबंधित रोग, मूत्र रोग, रक्त एवं त्वचा रोग, खाज- खुजली, फोड़े, सूजन, नासूर, अर्ष तथा वीर्य संबंधित विकार होते हैं।

उपयुक्त आहार:

संतरा, अमरूद, अंगूर, केला, ककड़ी, खीरा, पालक, आलू, प्याज, लहसुन, अदरक उपयोगी हैं। मिर्च से परहेज करना चाहिये।

अनुकूल व्यवसाय:

व्यक्ति सेना, पुलिस, कैमिस्ट, मशीनरी, अग्निशमन, वकालत, संगठन, संचालक, नियंत्रण, चिकित्सक, ज्यातिष, गोला-बारूद, धार्मिक कार्य, इंजीनियर, औषधि आदि संबंधित कार्यो में अधिक सफल होते हैं।

लिए गुलाबी, गहरा लाल, सफेद, तथा पीला रंग अनुकूल एवं शुभप्रद है। इनके लिए अनुकूल रत्न, रुबी, गारनेट, मूँगा, माणिक, रत्न धारण करना लाभप्रद एवं भाग्योन्नति कारक होते हैं। इनके लिए पूर्व, उत्तरपूर्व एवं उत्तर पश्चिम दिशा अनुकूल होती है।

शुभ दिशा:

व्यक्ति के लिए अनुकूल दिशा दक्षिण और अग्नि कोण है। व्यक्ति के लिए गुलाबी, गहरा लाल, सफेद, तथा पीला रंग अनुकूल एवं शुभप्रद है।

मूलांक 9 के व्यक्ति के लिए कष्ट निवारक उपाय:

- **मूलांक 9** स्वामी मंगल ग्रह के शुभ प्रभावो की वृद्धि हेतु आप अपनी अनामिका उंगली में मूंगा धारण कर सकते हैं।
- अपने पूजा स्थान में प्राण-प्रतिष्ठित मंगल गणेश यंत्र, मंगल यंत्र को स्थापित कर सकते हैं।
- यदि जीवन में आर्थिक समस्या हो तो प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र का नियमित पूजन करना लाभप्रद रहेगा।

मंगलवार का व्रत:

मंगल ग्रह को प्रसन्न करने हेतु मंगलवार का व्रत किया जाता हैं। जिस व्यक्ति स्वभाव उग्रता युक्त या हिंसात्मक, अधिक गुस्से वाला हो उनके मंगलवार का व्रत करने से मन शांत होता हैं। मंगलवार का व्रत करने से गणपतीजी, हनुमानजी भी प्रसन्न होते हैं। मंगलवार का व्रत करने से भूत-प्रेत बाधा दूर होती हैं, व्यक्ति के सभी संकट दूर हो जाते हैं। **मूलांक 9** वाली अविवाहित लडको के व्रत करने से उसकि बुद्धि और बल का विकास होता हैं। मंगलवार का व्रत करने से मंगल के प्रभाव में आने वाले सभी व्यवसाय एवं वस्तुओ से लाभ प्राप्त होता हैं।

ग्रह शांति के लिए उपयुक्त रुद्राक्ष:

आपके **मूलांक** का स्वामी मंगल हैं अतः मंगल ग्रह के अशुभ प्रभाव को दूर करने और शुभफलों की प्राप्ति के लिए पांच दाने 3 मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए उपयुक्त रहेगा।

आप 3 मुखी रुद्राक्ष के साथ में 1 मुखी या 12 मुखी और 5 मुखी रुद्राक्ष भी धारण करने से आपको विशेष शुभ परिणामो की प्राप्ति होगी।

ग्रह शांति के लिए दान

ग्रह:- मंगल

वार:- मंगलवार

मंगल ग्रह कि शांति हेतु मूंगा, मसूर, घी, गुड़, लाल कपड़ा, रक्त चंदन, गेहूँ, केसर, ताँबा, लाल फूल का दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह शांति के अन्य सरल उपाय:

- **मूलांक 9** के लोगों को किसी भी प्रकार के दुःखो एवं संकटो के निवारण हेतु श्री गणेश जी कि आराधना अवश्य करनी चाहिये।
- हर मंगलवार को हनुमान जी को बेसन के लड्डू का भोग लगाये और लड्डू के प्रसाद को मंदिर में बांटदें। हनुमान जी के दर्शन करते समय पहले पैर देखें फिर अपनी नजर उपरकी और करते हुवे मुख देखें।
- धन वृद्धि हेतु मछलियों को आटे कि गोलीया बनाकर खिलाये और पक्षियों को दाना डाले।
- शिक्षा से संबंधित समस्या दूर करने के लिए लाल फूल के पौधे लगाएं।
- स्वास्थ्य लाभ हेतु लाल रोली(कूमकूम) डाल कर सूर्य को जल चढ़ाएं।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

मोक्षदा एकादशी 18 दिसम्बर 2018

संकलन गुरुत्व कार्यालय

युधिष्ठिर श्री कृष्ण से पूछते है, हे प्रभु! मार्गशीर्ष मास के शुक्लपक्ष को कौन सी एकादशी होती है ? उसका क्या विधि-विधान है तथा इस एकादशी में किस देवता का पूजन किया जाता है? प्रभु कृप्या यह सब वास्तविक से बताइये।

श्रीकृष्ण बोलें हे युधिष्ठिर मार्गशीर्ष मास के शुक्लपक्ष की एकादशी का वर्णन तुम ध्यान पूर्वक सुनों, इस व्रत के माहात्मय को पढ़ने और श्रवण मात्र से व्यक्ति को वाजपेय यज्ञ के समान फल की प्राप्ति होती है। इस एकादशी का नाम मोक्षदा एकादशी है। मोक्षदा एकादशी मनुष्य के सकल पापों का नाश करने वाली है। राजन् मोक्षदा एकादशी के दिन तुलसी की मंजरी एवं भगवान दामोदर का पूजन धूप-दीप आदि से विधि-विधान पूर्वक करना चाहिए । एकादशी व्रत का नियम एक दिन पूर्व अर्थात दशमी से करना उचित होता है। राजन् यह मोक्षदा एकादशी बड़े से बड़े पातकों का भी नाश करने में समर्थ है । उस दिन रात्रि जागरण करना चाहिए ।

यदि पितृगण किसी कारण से कष्ट भोग रहे हो या मोक्ष नहीं हो रहा हों, वह मोक्षदा एकादशी का व्रत करे और इस व्रत का पुण्यदान अपने पितरों के नाम करें तो अवश्य ही पितर मोक्ष को प्राप्त होता हैं ।

अब तुम इस मोक्षदा एकादशी कि व्रत कथा का पौराणिक प्रसंग ध्यान पूर्वक श्रवण करों, चम्पक नगर में वैखानस नाम का राजा राज करते थे। राजा अपनी प्रजा का अपनी संतान की भाँति पालन करते थे ।

वैखानस को एक दिन रात को स्वप्न में अपने पितरों को कष्टमय अवस्था में नरक लोक में देखा । राजा ने अपने पूर्वजों को इस अवस्था में देखकर कर मन में बड़ा अचरज हुआ ।

राजा ने अगले दिन अपने इस स्वप्न का फल अपने राज्य के श्रेष्ठ ब्राह्मणों के समक्ष करने का निर्णय किया। अगले दिन राज्य के सभी श्रेष्ठ ब्राह्मणों को आमंत्रित किया।

सभी उपस्थित ब्राह्मणों को प्रणाम कर राजा बोले हे श्रेष्ठ ब्रह्मण गण मैने कल रात स्वप्न में जो देखा उसका संपूर्ण वृतांत आपके सामने कर रहा हूं कृप्या आप सब ध्यान पूर्व इस सुने कल रात स्वप्न में मैने अपने पितरों को नरक में गिरा हुआ देखा है, सब मुझसे कह रहे थे कि 'तुम हमारे वंशज हो, इसलिए तुम इस नरक से हम लोगों का उद्धार करो।

हे ब्राह्मण देव इस प्रकार मुझे अपने पितरों के दर्शन हुए हैं । जिस के पश्चयात मुझे चैन नहीं मिलता । मेरे जैसे पुत्र के होते हुए भी मेरे पितर गण घोर नरक में पड़े हुए हैं, तो मेरे जैसे पुत्र से क्या लाभ है ? अतः आप सब कृप्या कर मेरे पूर्वजों के नरक लोक से उद्धार एवं कल्याण के लिए कोई उपाय बताए। ब्राह्मणों ने सुझाव दिया की निकट में ही श्रेष्ठ पर्वत मुनि का आश्रम है । जो भूत-भविष्य के ज्ञाता हैं । अतः आप उन्हींके पास जाइये और अपने पितरों के उद्धार का मार्ग पूछिये।

ब्राह्मणों की बात सुनकर राजा वैखानस पर्वत मुनि के आश्रम पर गये और पर्वत मुनि को दण्डवत् प्रणाम करके मुनि के आशिर्वाद लिया । मुनि ने राजा से राज्य के कुशल-मंगल पूछे। राजा बोले मुनिश्रेष्ठ प्रभुकी कृपा से मेरे राजकाज सकुशल हैं ।

लेकिन मैंने स्वप्न में देखा कि मेरे पितर नरक में कष्ट भोग रहे हैं । कृप्या बताइये कि किस प्रकर उनका उस नरक लोक से छुटकारा होगा ? राजा की बात सुनकर मुनि पर्वत बोले ,महाराज मार्गशीर्ष के शुक्लपक्ष की मोक्षदा एकादशी का व्रत करने से और उसका पुण्य पितरों के नाम करने से, उस पुण्य के प्रभाव से आपके पितरो का नरक से उद्धार होगा ।

मुनि के वचन सुनकर राजा ने मार्गशीर्ष मास में मुनि के कहें अनुसार मोक्षदा एकादशी का व्रत करके उसका पुण्य पितरों के नाम कर दिया।
पुण्य देते ही वैखानस के पितरों को नरक से मिल गई । नरक से मुक्त होते ही, पितर गण बोले बेटा तुम्हारा कल्याण हो । इतना कहकर सभी पितर स्वर्ग लोक को प्राप्त हुए।

श्रीकृष्ण बोले हे राजन् जो व्यक्ति इस प्रकार कल्याणकारी मोक्षदा एकादशी का विधि-विधान से व्रत करता है। उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और मृत्यु के पश्चात उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है । यह मोक्षदा एकादशी व्यक्ति की समस्त कामनाओं को पूर्ण करने में समर्थ है ।

***

कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***

सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

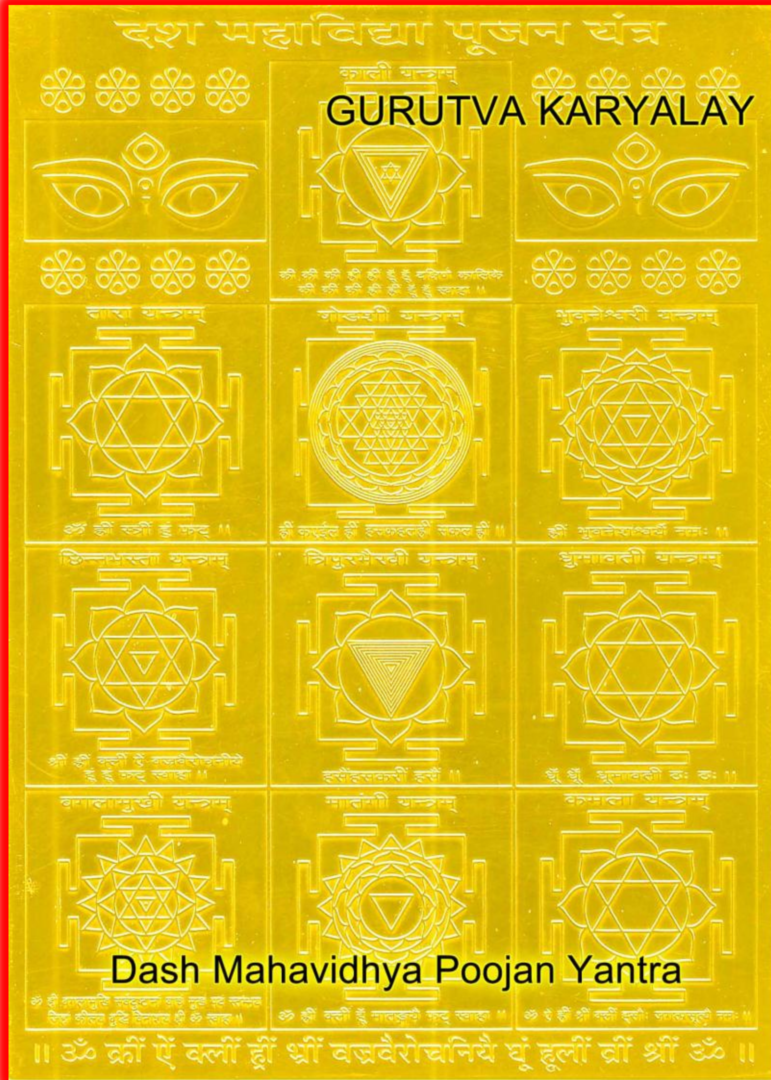
श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।

दस महाविद्या पूजन यंत्र



दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- भाग्योदय यंत्र
- मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- गृहस्थ सुख यंत्र
- शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- रोग निवृत्ति यंत्र
- साधना सिद्धि यंत्र
- शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

>> Shop Online | Order Now

- क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |
www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र



शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> **Shop Online** | **Order Now**

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र
मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1” X 1”	550	1” X 1”	370	1” X 1”	325
2” X 2”	910	2” X 2”	640	2” X 2”	550
3” X 3”	1450	3” X 3”	1050	3” X 3”	910
4” X 4”	2350	4” X 4”	1450	4” X 4”	1225
6” X 6”	3700	6” X 6”	2800	6” X 6”	2350
9” X 9”	9100	9” X 9”	4600	9” X 9”	4150
12” X12”	12700	12” X12”	9100	12” X12”	9100

16 दिसम्बर से 22 दिसम्बर 2018 साप्ताहिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
16	रवि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	नवमी	-	उत्तराभाद्रपद	28:07	व्यतिपात	25:31	बालव	19:15	मीन	-
17	सोम	मार्गशीर्ष	शुक्ल	नवमी - दशमी	07:46	रेवति	28:16	वरियान	24:53	कौलव	07:46	मीन	-
18	मंगल	मार्गशीर्ष	शुक्ल	दशमी - एकादशी	08:12	अश्विनी	28:37	परिग्रह	23:38	गर	08:12	मीन	04:17
19	बुध	मार्गशीर्ष	शुक्ल	एकादशी -द्वादशी	07:47	भरणी	28:11	शिव	21:45	विष्टि	07:47	मेष	-
20	गुरु	मार्गशीर्ष	शुक्ल	त्रयोदशी	28:40	कृतिका	27:03	सिद्ध	19:17	कौलव	17:43	मेष	09:59
21	शुक्र	मार्गशीर्ष	शुक्ल	चतुर्दशी	26:12	रोहिणि	25:21	साध्य	16:20	गर	15:30	वृष	-
22	शनि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	पूर्णिमा	23:18	मृगशिरा	23:14	शुभ	12:58	विष्टि	12:47	वृष	12:21

16 दिसम्बर से 22 दिसम्बर 2018 साप्ताहिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
16	रवि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	नवमी	-	धनु संक्रान्ति प्रातः 05:35 बजे, मांगलिक कार्यों में वर्जित धनु, खर मास प्रारंभ महानन्दा नवमी,
17	सोम	मार्गशीर्ष	शुक्ल	नवमी - दशमी	07:46	दशादित्य व्रत,
18	मंगल	मार्गशीर्ष	शुक्ल	दशमी - एकादशी	08:12	मोक्षदा एकादशी व्रत, वैकुण्ठ एकादशी, श्रीमद् भगवद्गीता जयंती,
19	बुध	मार्गशीर्ष	शुक्ल	एकादशी - द्वादशी	07:47	अखण्ड द्वादशी, श्यामबाबा द्वादशी, केशव द्वादशी, व्यंजन द्वादशी, दान द्वादशी, मत्स्य द्वादशी,
20	गुरु	मार्गशीर्ष	शुक्ल	त्रयोदशी	28:40	प्रदोष व्रत,
21	शुक्र	मार्गशीर्ष	शुक्ल	चतुर्दशी	26:12	शिव चतुर्दशी, पिशाच मोचन श्राद्ध चतुर्दशी,
22	शनि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	पूर्णिमा	23:18	स्नान-दान हेतु उत्तम अग्रहायणी पूर्णिमा, बत्तीसी पूनम, दत्तात्रेय जयंती, त्रिपुरभैरवी महाविद्या जयंती, अन्नपूर्णा जयंती, छप्पन भोग, कात्यायनी पूजा पूर्ण, लवण-दान, श्रीसत्यनारायण व्रत-कथा

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	Diamond (Special)	Green Emerald (Special)	Naturel Pearl (Special)	Ruby (Old Berma) (Special)	Green Emerald (Special)
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	Red Coral (Special)	Y.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	Y.Sapphire (Special)
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र
(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)



घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऎश्वर्य, संततित्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अदद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

16 दिसम्बर से 22 दिसम्बर 2018 -विशेष योग			
कार्य सिद्धि योग			
16	प्रातः06:13 से 17 दिसं. प्रातः 03:09 तक	20	प्रातः 04:13 से प्रातः 06:15 तक
18	प्रातः06:14 से 19 दिसं. प्रातः 04:39 तक		
विघ्नकारक भद्रा			
18	सांय 07:52 से 19 दिसं. प्रातः 07:35 तक (स्वर्ग)	21	रात 02:09 से 22 दिसं. दोपहर 12:46 तक (स्वर्ग)

योग फल :

- ❖ कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- ❖ शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रहमांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रहमांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, preciouse and semi preciouse Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach …………………………………	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach …………………………………	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach ………………………	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach ………………………………	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach ………………………………	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach …………………………………………	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach …………………………………………	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach ……………………	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach ………………………………………	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach ………………………………	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach …………………………………………	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ………………………………	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach ………………………………………	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach ……………………………	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ……………	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach ………………………………	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach …………………………………………	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach ………………………………	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach …………………………………	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach ………………………	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach …………………………………	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ………………………………	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach …………………………………	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ………………	3250	शनि साड़ेसाती और ढ़ैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach ………………………………………	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach ………………………	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach ……………	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach ………………………………	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach ………………………………………	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach ………………………………	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach ………………………………………	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach ……………………	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach ………………………………………	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ………………………	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach ………………………………	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach …………………………	1050

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ………………………………	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach ………………………………………	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach …………………………	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach …………………………	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ………………………………..	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach …………………………………	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach …………………………………	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ………………………	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ………………………………	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach ……………………..	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ………………………………	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ………………………………………	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ………………………………………	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach ………………………………………	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ………………………………..	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach …………………………………	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach …………………………………	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ………………………………………	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach ………………………………………………	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ………………………………	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach ………………………………………	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ………………………………	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach ………………………………………	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach …………………………………	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ………………………………..	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach ………………………………………	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ………………………………..	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach …………………………..	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach ……………………………...	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ………………………………………	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ………………………..	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach ……………………	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach …………………………………	820

वाणी पृष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640





Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	(बैंकोक पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : Bangkok (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

>> **Shop Online** | **Order Now**

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका

16 दिसम्बर से 22 दिसम्बर 2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।

जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



GURUTVA JYOTISH

Weekly

16-Dec to 22-Dec 2018